ISSN -2393-8048, January-June 2014, Submitted in March 2014, iajesm2014@gmail.com

आधुनिक समय में उपयोग की जाने वाली शिक्षण पद्धितयों का अध्यन

[1]पूनम लता मिड्ढा, अनुसंधान विद्वान, शिक्षा विभाग, बुंदेलखंड विश्विद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)
[2]डॉ बद्री प्रशाद गुप्ता, अनुसंधान पर्यवेक्षक, वयख्याता (शिक्षा विभाग), बुंदेलखंड विश्विद्यालय, झाँसी (उत्तर प्रदेश)

अध्यापक के कंधे पर ही विद्यालय एवं विद्यार्थी काउत्थान या पतन निर्भर करता है, विद्यालय का पतन भी हो सकता है, यदि अध्यापक शिथिल हो तो,परन्तु यदि वह स्फूर्तिपूर्ण है, तो वह विद्यार्थियों का शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास कर सकता है। यह बालकों को पशुवृत्ति से निकालकर मानवीय प्रकृति की ओर उन्मुख करता है। शिक्षक बालकों के सीधे सम्पर्क में रहते हैं। अतः वे सबसे अधिक बालकों के आचरण व व्यवहार को प्रभावित करते हैं। शिक्षक अपना संपूर्ण जीवन शिक्षा के क्षेत्र को समर्पित कर देते है। उनके जीवन का मुख्य उद्देष्य विद्यार्थियों को उच्च कोटि की शिक्षा प्रदान करना होता है एवं अपने ज्ञान रुपी प्रकाश से अपने शिष्यों के अंधकारमय जीवन को आलोकित करते है। शिक्षकों की भाषा बहुत ही कोमल एवं लुहावनी होती है, अपनी इसी विशेषता के कारण ही वे विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेते है और उबाऊ पाठ्यक्रम को भी रोचक बना देते है। यदि शिक्षकों का दृष्टिकोण मनोवैज्ञानिक नहीं है तो वे अपने विद्यार्थियों के मनोभाव को नहीं समझ सकते, फलस्वरुप उन्हें शिक्षण कार्य करने में कठिनाई महसूस होगी इसलिए शिक्षकों को मनोवैज्ञानिक तौर पर बहुत ही निपुण होना चाहिए, क्योंकि यदि वे इस विधि में निपुण है, तो वे अपने विद्यार्थियों की शिक्षण संबंधी बहुत सी परेशानियों को बहुत ही सुगुमता से हल कर लेगें।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव के सर्वागीण विकास की जननी है। मानव की आंतरिक शक्तियों का विकास शिक्षा से ही सम्भव है। जीवन में शिक्षा का वही महत्व है, जो पेड़ पौधे के लिए कृषि का होता है। शिक्षा के बिना मानव जीवन का कोई मूल्य नहीं है, शिक्षा के सहारे ही मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है। यदि मानव के जीवन में शिक्षा न हो, तो वह बिल्कुल पशु तुल्य ही है।प्राचीन समय से आज तक शिक्षा, मानव एवं समाज के विकास का महत्वपूर्ण साधन रही है। शिक्षा मानव को इस योग्य बनाती है, कि वह अपने निर्णय उचित ढंग से ले सकें। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति पशुवत प्रवृत्ति के ऊपर उठकर मानव बनता है और अपना उचित विकास करता है।

2. शिक्षकों द्वारा अपनाई गई आधुनिक पद्धतियाँ

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

आज का युग आधुनिक युग है, जिससे शिक्षा जगत भी अछूता नहीं है। आज शिक्षक अपने अध्यापन कार्य को करने के लिए आधुनिक पद्धतियों का प्रयोग बखूबी रुप से कर रहे है और इसकी आवष्यकता भी है।

आधुनिक पद्धतियों के माध्यम से ही एक शिक्षक होनहार विद्यार्थियों को जन्म दे सकता है क्योंकि इन पद्धतियों के सहारे ही विद्यार्थियों को नए नए अविष्कारों एवं शिक्षा के क्षेत्र में आये नवीन आयामों से यथासमय अवगत कराया जा सकता है और विद्यार्थियों के ज्ञान को विस्त्रृत रुप प्राप्त होता है।

2.1 आधुनिक पद्धतियों के प्रकार

आधुनिक पद्धतियों के बहुत से प्रकार होते है परन्तु कुछ प्रकार ऐसे है जिनका प्रयोग शिक्षक अपने अध्यापन कार्य हेतु करते है, उनकी सूची निम्नवत् है–

स्पीकर	ऑन लाइन स्ट्रीमिंग वीडियो़	इंटरैक्टिव वाइटबोर्ड़
वीज्वलाईजर्	प्रतिक्रिया पद्धति़	सी़ डी.
प्रोजेक्टर	शिक्षाप्रद साफ़्टवेयर , आदि ।	

2.2 आधुनिक पद्धतियों की विशेषताएँ

शिक्षकों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वालीआधुनिक पद्धतियों से विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया में बढ़ोत्तरी होती है एवं इस पद्धति के द्वारा उनका विकास भी तीव्र गति से होता है। इंटरनेट के जरिए इन सभी पद्धतियों को आसानी से उपलब्ध कराया

जा सकता है। इस पद्धति के द्वारा विद्यार्थी घर पर बैठकर भी अपनी सभी शंकाओं को आसानी से दूर कर सकता है, यह सब वीडियो कोनफ्रेसिंग और लाईव चेट के द्वारा सम्भव है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी यह बात सिद्ध हुई है कि बच्चे किताबी ज्ञान एवं श्याम्पट्ट की तुलना में चित्र एवं दृष्य साम्रगी द्वारा जल्दी सीखते है। एक चित्र 1000 शब्द के बराबर होता है और एक वीडियो 1000 चित्रों के बराबर होती है इसलिए हम कह सकते है कि आधुनिक पद्धतियों की सहायता से विद्यार्थियों को आसानी से उचित ज्ञान कराया जा सकता है। शिक्षकों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वालीआधुनिक पद्धति बहुत ही आर्कषित एवं प्रेरणादायक होती है। कुछ प्रसंग ऐसे होते है जिन्हें शिक्षक ठीक प्रकार से नहीं समझा पाता परन्तु आधुनिक पद्धतियों के माध्यम से शिक्षक उस दुविधा से बाहर निकल सकते है। अतः यह कहा जा सकता है कि आधुनिक पद्धतियों के द्वारा शिक्षकों की कार्य संतुष्टि प्रभावित होती है एवं इसका सकारात्मक प्रभाव शिक्षकों पर पड़ता है।

3. आधुनिक पद्धति के सकारात्मक प्रभाव

शिक्षा में तकनीक का प्रयोग,शिक्षा प्रक्रिया में परिवर्तन लाने हेतु हुआ है और इसके सकारात्मक प्रभाव भी हमें देखने को मिलते है। आज का युग आधुनिक युग कहा जाता है और इस आधुनिक युग की देन है कम्प्यूटर अर्थात आज के युग को कम्प्यूटर का युग भी कहा जाता है। कम्प्यूटर का प्रयोग बहुत ही व्यापक रुप से हो रहा है। कम्प्यूटर ने पूरी दुनिया को सूक्ष्म रुप प्रदान किया है इसके प्रयोग में समय ,धन एवं शक्ति का प्रयोग भी न के बराबर होता है अर्थात यह एक मितव्ययी आविष्कार है। कम्प्यूटर बहुत ही तीव्र गति से कार्य करता है। इसमें लाखों की संख्याओं मे सूचनाएँ उपलब्ध होती है। सन् 1946 के बाद में कम्प्यूटर का विकास होना शुरु हुआ और इसके विकास की प्रक्रिया आज भी चल रही है। आज कम्प्यूटर एक बहुत ही महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है जिसके जरिये शिक्षण कार्य करना बहुत ही सरल हो गया है। शिक्षा में तकनीक के प्रयोग से बहुत से लाभ हुए है इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है शिष्यों

की पढने के प्रति उत्सुकता अक्सर यह देख गया है कि छात्र किताबी ज्ञान को अधिक ध्यान से नहीं पढता परंतु उसी पाठ को जिसमें उसका मन नहीं लग रहा था कम्प्यूटर की मदद से समझाया जाये तो छात्र अधिक उत्सुकता के साथ उसे पढते है इसका असर शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर भी पडता है क्योंकि जब छात्र पढने में अपना मन लगाते है तो इसका सीधा प्रभाव शिक्षकों पर पडता है क्योंकि शिक्षक की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने शिष्यों को अच्छा ज्ञान प्रदान करे एवं छात्र उस ज्ञान को ग्रहण कर अच्छे नतीजें शिक्षकों को प्रदान करें। यदि छात्र अच्छे नतीजो के साथ उत्तीर्ण होता है एवं अपने भावी जीवन के लिए पूर्ण रुप से तैयार हो जाता है तो सबसे अधिक खुशी एवं संतुष्टि उस शिक्षक को होती है जो उसे शिक्षा प्रदान कर रहा है। आधुनिक तकनीक की मदद से शिक्षा अत्यधिक प्रभावित हो रही है एवं इसके सकारात्मक प्रभाव देखने को मिल रहे है।

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY

इसके प्रयोग से दूरवर्ती–अधिगम को भी बढावा मिला है। आधुनिक तकनीक की मदद से शिक्षा के क्षेत्र में परेशानियों एवं आई जटिलताओं को सरल एवं सुगम बनाया गया है। शिक्षक कक्षा शिक्षण के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग कर रहे है एवं उनकी यही कोशिश रहती है किवह अच्छे से अच्छा ज्ञान एवं जानकारियाँ छात्रों तक पँहुचा सके प्राचीन काल के समय में अर्थात जब तकनीक का विकास नहीं हुआ था। जब छात्रों के परीक्षाफल को तैयार करने मेंअधिक समय व्यय होता था परन्तु अब तकनीक की मदद से परीक्षाफलों को शीघ्र बना लिया जाता है। आधुनिक तकनीक की मदद छात्रों एवं शिक्षकों दोनों को उपयोगी प्रेरणा प्राप्त होती है आज यह तकनीकें मितव्ययी है एवं हर व्यक्ति बडी ही सरलता से इसका उपयोग कर सकता है। इन तकनीकों की मदद से शिक्षक अपने ज्ञान के क्षेत्र को बढा सकता है उसे अपने शिक्षकों तक पहुँचा सकता है। आधुनिक तकनीकों की मदद से छात्रों का दिशा –निर्देशन ठीक प्रकार से किया जा सकता है क्योंकि अध्ययनों से पता चला है कि छात्र सुनने की उपेक्षा देखकर अधिक सीखते है और कम्प्यूटर की मदद से छात्र अपने विषय सें संबंधित जानकारी जुटाकर उसे पढ सकते है एवं उससे संबंधित चलचित्र भी वे कम्प्यूटर पर देख सकते है वर्तमान समय में इंटरनेट कनेक्शनों की कुल संख्या 46 करोड 21लाख 24हजार 989 है।

4. **निष्कर्ष**

निष्कर्ष रुप में यह कहना उचित है कि शिक्षकों की जीवनशैली का विद्यार्थियों के जीवन पर पूर्णरुप से प्रभाव पडता है, शिक्षकों के अभाव में मनुष्य का जीवन शून्य मात्र है। जहाँ गुरु शिष्य परम्परा सबसे पहले शुरु हुई थी वह देश भारत ही है।एक अच्छा शिक्षक समय का पाबंद होता है, समय की पाबंदगी ही उसकी विशेषता होती है, समय का पाबंद होने के साथ साथ वह अनुशासान प्रिय भी होता है। अपनी इस विशेषता के कारण ही समाज में वह मान सम्मान प्राप्त करता है। शिक्षकों में समानता का गुण भी होता है, शिक्षक अपने सभी विद्यार्थियों के साथ समानता का व्यवहार करते है, उनके लिए जातपात, ऊँच–नीच सब व्यर्थ की बातें हैं,वे अपने सभी विद्यार्थियों को समान दृष्टि से देखते हैऔर केवल अपना शिक्षक धर्म निभाते है।एक अच्छा शिक्षक देशभक्त भी होता है और उसमें देशभक्ति की भावना भी कूट कूट कर भरी होती है और अपनी इस भावना को वे अपने विद्यार्थियों तक पहुँचाते है, जिसके परिणाम स्वरुप ही विद्यार्थी अच्छे देशप्रेमी या देशभक्त बन पाते है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अकराम अननाम और अन्य (2013) – कार्य सशक्तिकरण पर नौकरी स्वायत्तता के प्रभावरू पाकिस्तान के विश्वविद्यालयों में नौकरी क्राफ्टिंग की मध्यस्थता भूमिका
2. हुसैन राय इम्तियाज और मुस्तबा बहौदी जी (2012) – कार्य–जीवन संघर्ष और कर्मचारी प्रदर्शन के बीच संबंधरू पाकिस्तान में राष्ट्रीय डेटाबेस और पंजीकरण प्राधिकरण श्रमिकों का एक अध्ययन
3. स्कुल्ज सैलोम और स्टेन ट्रेडी (2007) – दक्षिण अफ्रीकी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के पेशेवर जीवन में तनाव
4. डॉ नैग्रा विप्पर और अरारा सरीता (2013) – शिक्षक शिक्षकों के बीच व्यावसायिक तनाव और स्वास्थ्य
5. आफ्टाब मारिया और खाटून तहरा (2012) – जनसांख्यिकीय अंतरण और माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव
6. एंटोनियो एलेक्जेंडर– स्टेमाटियस और अन्य (2013) – प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के शिक्षकों में व्यावसायिक तनाव और पेशेवर जलानारू मुकाबला करने की रणनीति
7. केलजांग ताशी (2014) – भूटाने वाले शिक्षकों के बीच व्यावसायिक तनाव
8. जैक्सन लियोन और रोस्थमैन सेबास (2006) – उत्तर पश्चिम प्रांत में व्यावसायिक तनाव, अंगों की प्रतिबद्धता और शिक्षकों की बीमार स्वास्थ्य